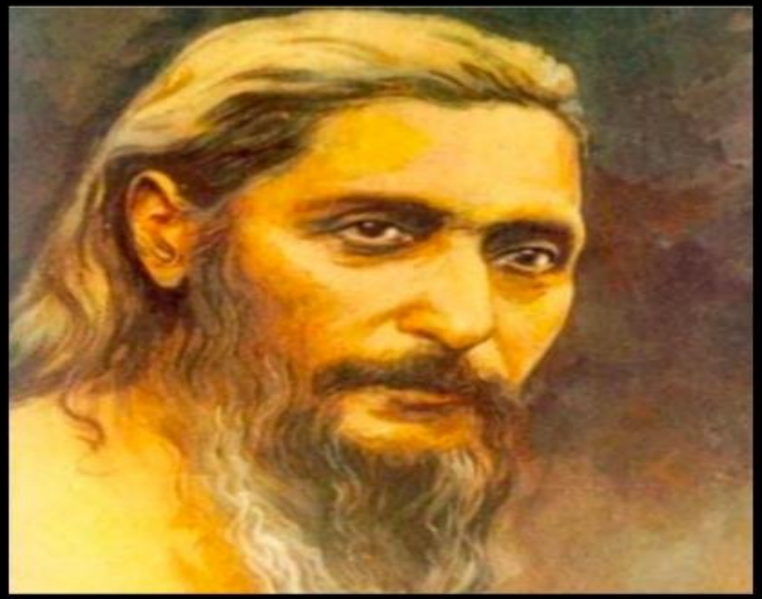

राम की शक्ति
पूजा कविता की
सरल व्याख्या
भाग 2

निराला

प्रस्तुतकर्ता- डॉ आरिफ महात

राम की शक्ति पूजा

बैठे मारुति देखते राम-चरणारं वन्द-
युग 'अस्ति-नास्ति' के एक रूप, गुण-गण-अनिन्द्य;
साधना-मध्य भी साम्य-वाम-कर द क्षणपद,
द क्षण-कर-तल पर वाम चरण, क पवर गद् गद्
पा सत्य सच्चिदानन्द रूप, वश्राम - धाम,
जपते सभक्ति अजपा वभक्त हो राम - नाम।
युग चरणों पर आ पड़े अस्तु वे अश्रु युगल,
देखा क प ने, चमके नभ में ज्यों तारादल;
ये नहीं चरण राम के, बने श्यामा के शुभ,-
सोहते मध्य में हीरक युग या दो कौस्तुभ;
टूटा वह तार ध्यान का, स्थिर मन हुआ वकल,
सन्दिग्ध भाव की उठी दृष्टि, देखा अ वकल
बैठे वे वहीं कमल-लोचन, पर सजल नयन,
व्याकुल-व्याकुल कुछ चर-प्रफुल्ल मुख निश्चेतन।
"ये अश्रु राम के" आते ही मन में वचार,
उदवेल हो उठा शक्ति - खेल - सागर अपार,
हो श्वे सत पवन - उनचास, पता पक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उड़ा अतुल,
शत घूर्णावर्त, तरंग - भंग, उठते पहाड़,
जल रा श - रा श जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसन्ध धरा हो स्फीत वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष,
शत-वायु-वेग-बल, डूबा अतल में देश - भाव,
जलरा श वपुल मथ मला अनिल में महाराव
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश
पहुँचा, एकादश रूद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।

राम की शक्ति पूजा

रावण - महिमा श्यामा वभावरी, अन्धकार,
यह रूद्र राम - पूजन - प्रताप तेजः प्रसार;
उस ओर शक्ति शिव की जो दशस्कन्ध-पूजित,
इस ओर रूद्र-वन्दन जो रघुनन्दन - कूजित,
करने को ग्रस्त समस्त व्योम क प बढ़ी अटल,
लख महानाश शव अचल, हुए क्षण-भर चंचल,
श्यामा के पद तल भार धरण हर मन्द्रस्वर
बोले- "सम्बरो, दे व, निज तेज, नहीं वानर
यह, -नहीं हुआ श्रृंगार-युग्म-गत, महावीर,
अर्चना राम की मूर्तिमान अक्षय - शरीर,
चर - ब्रह्मचर्य - रत, ये एकादश रूद्र धन्य,
मर्यादा - पुरूषोत्तम के सर्वोत्तम, अनन्य,
लीलासहचर, दिव्यभावधर, इन पर प्रहार
करने पर होगी दे व, तुम्हारी वषम हार;
वदया का ले आश्रय इस मन को दो प्रबोध,
झुक जायेगा क प, निश्चय होगा दूर रोध।"

राम की शक्ति पूजा

कह हुए मौन शव, पतन तनय में भर वस्मय
सहसा नभ से अंजनारूप का हुआ उदय।
बोली माता "तुमने र व को जब लया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल,
यह वही भाव कर रहा तुम्हें व्याकुल रह रह।
यह लज्जा की है बात कि माँ रहती सह सह।
यह महाकाश, है जहाँ वास शव का निर्मल,
पूजते जिन्हें श्रीराम उसे ग्रसने को चल
क्यों नहीं कर रहे तुम अनर्थ? सोचो मन में,
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्री रघुनन्दन ने?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य,
क्यों असम्भाव्य हो यह राघव के लये धार्य?"
क प हुए नम्र, क्षण में माता छ व हुई लीन,
उतरे धीरे धीरे गह प्रभुपद हुए दीन।

राम की शक्ति पूजा

राम का वषण्णानन देखते हुए कुछ क्षण,
"हे सखा" वभीषण बोले "आज प्रसन्न वदन
वह नहीं देखकर जिसे समग्र वीर वानर
भल्लुक वगत-श्रम हो पाते जीवन निर्जर,
रघुवीर, तीर सब वही तूण में हैं र क्षत,
है वहीं वक्ष, रणकुशल हस्त, बल वही अ मत,
हैं वही सु मत्रानन्दन मेघनादजित् रण,
हैं वही भल्लपति, वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन,
ताराकुमार भी वही महाबल श्वेत धीर,
अप्रतिभट वही एक अर्बुद सम महावीर
हैं वही दक्ष सेनानायक है वही समर,
फर कैसे असमय हुआ उदय यह भाव प्रहर।
रघुकुलगौरव लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण,
तुम फैर रहे हो पीठ, हो रहा हो जब जय रण।

राम की शक्ति पूजा

कतना श्रम हुआ व्यर्थ, आया जब मलनसमय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय!
रावण? रावण लम्पट, खल कल्म्ष गताचार,
जिसने हित कहते कया मुझे पादप्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फर,
कहता रण की जय-कथा पारिषद-दल से घिर,
सुनता वसन्त में उपवन में कल-कूजित पक
मैं बना कन्तु लंकापति, धक राघव, धक्- धक्?

सब सभा रही निस्तब्ध
राम के स्ति मत नयन
छोड़ते हुए शीतल प्रकाश देखते वमन,
जैसे ओजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उससे न इन्हें कुछ चाव, न कोई दुराव,
ज्यों हों वे शब्दमात्र मैत्री की समनुरक्ति,
पर जहाँ गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति।

राम की शक्ति पूजा

कतना श्रम हुआ व्यर्थ, आया जब मलनसमय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय!
रावण? रावण लम्पट, खल कल्म्ष गताचार,
जिसने हित कहते कया मुझे पादप्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फर,
कहता रण की जय-कथा पारिषद-दल से घिर,
सुनता वसन्त में उपवन में कल-कूजित पक
मैं बना कन्तु लंकापति, धक राघव, धक्- धक्?

सब सभा रही निस्तब्ध
राम के स्ति मत नयन
छोड़ते हुए शीतल प्रकाश देखते वमन,
जैसे औजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उससे न इन्हें कुछ चाव, न कोई दुराव,
ज्यों हों वे शब्दमात्र मैत्री की समनरक्ति,
पर जहाँ गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति।

राम की शक्ति पूजा

कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर,
बोले रघुम ण-" मत्रवर, वजय होगी न समर,
यह नहीं रहा नर-वानर का राक्षस से रण,
उतरीं पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण,
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।" कहते छल छल
हो गये नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कण्ठ, चमका लक्ष्मण तेजः प्रचण्ड
धँस गया धरा में क प गह युगपद, मसक दण्ड
स्थिर जाम्बवान, समझते हुए ज्यों सकल भाव,
व्याकुल सुग्रीव, हुआ उर में ज्यों वषम घाव,
निश्चित सा करते हुए वभीषण कार्यक्रम
मौन में रहा यों स्पन्दित वातावरण वषम।
निज सहज रूप में संयत हो जानकी-प्राण
बोले-"आया न समझ में यह दैवी वधान।
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर,
यह रहा, शक्ति का खेल समर, शंकर, शंकर!
करता मैं योजित बार-बार शर-निकर नि शत,
हो सकती जिनसे यह संसृति सम्पूर्ण वजित,
जो तेजः पुंज, सृष्टि की रक्षा का वचार,
हैं जिसमें निहित पतन घातक संस्कृति अपार।

राम की शक्ति पूजा

शत-शुद्ध-बोध, सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का ववेक,
जिनमें है क्षात्रधर्म का धृत पूर्ण अभिषेक,
जो हुए प्रजापतियों से संयम से रक्षित,
वे शर हो गये आज रण में, श्रीहत खण्डित!
देखा हैं महाशक्ति रावण को लिये अंक,
लांछन को ले जैसे शशांक नभ में अशंक,
हत मन्त्रपूत शर सम्वृत करतीं बार-बार,
निष्फल होते लक्ष्य पर क्षिप्र वार पर वार।
विचलित लख कपिदल क्रुद्ध, युद्ध को मैं ज्यों ज्यों,
झक-झक झलकती वह्नि वामा के दृग त्यों-त्यों,
पश्चात्, देखने लगीं मुझे बँध गये हस्त,
फिर खिंचा न धनु, मुक्त ज्यों बँधा मैं, हुआ त्रस्त!"

राम की शक्ति पूजा

कह हुए भानुकुलभूष्ण वहाँ मौन क्षण भर,
बोले वश्वस्त कण्ठ से जाम्बवान-"रघुवर,
वच लत होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुष सह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो वजय संयत प्राणों से प्राणों पर।
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौ लक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न सद् ध हो, रघुनन्दन!
तब तक लक्ष्मण हैं महावाहिनी के नायक,
मध्य भाग में अंगद, द क्षण-श्वेत सहायक।
मैं, भल्ल सैन्य, हैं वाम पार्श्व में हनुमान,
नल, नील और छोटे क पगण, उनके प्रधान।
सुग्रीव, वभीषण, अन्य यथुपति यथासमय
आयेंगे रक्षा हेतु जहाँ भी होगा भय।"

राम की शक्ति पूजा

खल गयी सभा। "उत्तम निश्चय यह, भल्लनाथ!"
कह दिया वृद्ध को मान राम ने झुका माथ।
हो गये ध्यान में लीन पुनः करते वचार,
देखते सकल-तन पुल कँत होता बार-बार।
कुछ समय अनन्तर इन्दीवर निन्दित लोचन
खुल गये, रहा निष्पलक भाव में मज्जित मन,
बोले आवेग रहित स्वर सें वश्वास स्थित
"मातः, दशभुजा, वश्वज्योति; मैं हूँ आ श्रत;
हो वद्ध शक्ति से है खल महिषासुर मर्दित;
जनरंजने-चरण-कमल-तल, धन्य सेंह गर्जित!
यह, यह मेरा प्रतीक मातः समझा इ गत,
मैं सेंह, इसी भाव से करूँगा अ भनन्दित।"

राम की शक्ति पूजा

कुछ समय तक स्तब्ध हो रहे राम छ व में निमग्न,
फर खोले पलक कमल ज्योतिर्दल ध्यान-लग्न।
हैं देख रहे मन्त्री, सेनापति, वीरासन
बैठे उमड़ते हुए, राघव का स्मित आनन।
बोले भावस्थ चन्द्रमुख निन्दित रामचन्द्र,
प्राणों में पावन कम्पन भर स्वर मेघमन्द्र,
"देखो, बन्धुवर, सामने स्थिर जो वह भूधर
शो भत शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुन्दर,
पार्वती कल्पना हैं इसकी मकरन्द वन्दु,
गरजता चरण प्रान्त पर संह वह, नहीं सन्धु।

राम की शक्ति पूजा

दशदिक समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर,
अम्बर में हुए दिगम्बर अ र्चत श श-शेखर,
लख महाभाव मंगल पदतल धँस रहा गर्व,
मानव के मन का असुर मन्द हो रहा खर्व।"
फर मधुर दृष्टि से प्रिय क प को खींचते हुए
बोले प्रियतर स्वर सें अन्तर सींचते हुए,
"चाहिए हमें एक सौ आठ, क प, इन्दीवर,
कम से कम, अ धक और हों, अ धक और सुन्दर,
जाओ देवीदह, उषःकाल होते सत्वर
तोड़ो, लाओ वे कमल, लौटकर लड़ो समर।"
अवगत हो जाम्बवान से पथ, दूरत्व, स्थान,
प्रभुपद रज सर धर चले हर्ष भर हनुमान।
राघव ने वदा कया सबको जानकर समय,
सब चले सदय राम की सोचते हुए वजय।
नि श हुई वगतः नभ के ललाट पर प्रथम करण
फूटी रघुनन्दन के दृग महिमा ज्योति हिरण।

राम की शक्ति पूजा

हैं नहीं शरासन आज हस्त तूणीर स्कन्ध
वह नहीं सोहता नि वड़-जटा-दृढ़-मुकुट-बन्ध,
सुन पड़ता संहनाद,-रण कोलाहल अपार,
उमड़ता नहीं मन, स्तब्ध सुधी हैं ध्यान धार,
पूजोपरान्त जपते दुर्गा, दशभुजा नाम,
मन करते हुए मनन नामों के गुणग्राम,
बीता वह दिवस, हुआ मन स्थिर इष्ट के चरण
गहन-से-गहनतर होने लगा समाराधन।

राम की शक्ति पूजा

क्रम-क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन बढ़ता गया ऊर्ध्व निरलस,
कर-जप पूरा कर एक चढाते इन्दीवर,
निज पुरश्चरण इस भाँति रहे हैं पूरा कर।
चढ़ षष्ठ दिवस आज्ञा पर हुआ समाहित-मन,
प्रतिजप से खंच- खंच होने लगा महाकर्षण,
सं चत त्रिकुटी पर ध्यान द वदल देवी-पद पर,
जप के स्वर लगा काँपने थेर-थर-थर अम्बर।
दो दिन निःस्पन्द एक आसन पर रहे राम,
अ र्पत करते इन्दीवर जपते हुए नाम।
आठवाँ दिवस मन ध्यान-युक्त चढ़ता ऊपर
कर गया अतिक्रम ब्रह्मा-हरि-शंकर का स्तर,
हो गया वजित ब्रह्माण्ड पूर्ण, देवता स्तब्ध,
हो गये दग्ध जीवन के तप के समारब्ध।
रह गया एक इन्दीवर, मन देखता पार
प्रायः करने हुआ दुर्ग जो सहस्रार,
द वप्रहर, रात्रि, साकार हुई दुर्गा छिपकर
हँस उठा ले गई पूजा का प्रिय इन्दीवर।

राम की शक्ति पूजा

यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भू म से उतरे, खोले पलक वमल।
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना अ सद् ध, भर गये नयेनद्वय,
" धक् जीवन को जो पाता ही आया वरोध,
धक् साधन जिसके लए सदा ही कया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता वनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद् ध के दुर्ग पहुँचा वद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन।

"यह है उपाय", कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन-
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"

राम की शक्ति पूजा

कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक।
ले अस्त्र वाम पर, दक्षण कर दक्षण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गये सुमन
जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय-
"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!"
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर-स्कन्ध पर, रहा दक्षण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश व वध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वर वन्दने कर।

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।